AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

छत्तीसगढ़ में पर्यटन की संभावनाएँ एवं समस्याएँ

डॉ. कुबेर सिंह गुरु पंच,
प्राचार्य
देव संस्कृति कॉलेज ऑफ एजुकेशन एंड टेक्नोलॉजी,
खपरी, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

श्रीमती ज्योति शर्मा,
डायरेक्टर,
देव संस्कृति कॉलेज ऑफ एजुकेशन एंड टेक्नोलॉजी,
खपरी, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

छत्तीसगढ़ में पर्यटन की अपार संभावनाएँ है। शोध एवं अनुसंधान की दृष्टिकोण से वैज्ञानिक पहलुओं का ध्यान रखते हुए मानचित्रों का उपयोग कर पर्यटन के अनेक पहलुओं का अध्ययन आवश्यक है। पर्यटन में भाषाओं से संबंधित तत्वों का अध्ययन, भौगोलिक तत्वों को ध्यान में रखकर किया जाता है। किसी स्थान और उनके निवासियों की संस्कृति, सुरूचि, परम्परा, जलवायु, पर्यावरण और विकास के स्वरूप विस्तृत ज्ञान प्राप्त करने और उसके विकास में सहयोग करने वाले पर्यटन को पर्यटन भूगोल के अंतर्गत अध्ययन करते है। पर्यटन स्थल पर अनेक प्रकार के सामाजिक तथा व्यापारिक समूह मिलकर कार्य करते है, जिसमें पर्यटक और निवासी दोनों महत्वपूर्ण हो जाते है। इसमें दोनों को ही व्यापार और आर्थिक विकास के अवसर मिलते है। स्थानीय वस्तुओं, कलाओं और उत्पादन को नये बाजार मिलते है और मानवता के विकास की दिशाए खुलती है। पर्यटन स्थल के राजनैतिक, सामाजिक और प्राकृतिक कारणों का बहुत महत्वपूर्ण होता है इसके लिए आवश्यक मानचित्र उपकरणों की आवश्यकता होती है। प्राचीन काल से ही पर्यटन की भौगोलिक विकास प्रारंभ हुआ और आर्थिक, धार्मिक, एवं सांस्कृतिक कारणों को जानने का अवसर प्राप्त हुआ। अनेक धर्मों और मान्यताओं का विकास हुआ।

मुख्य शब्द

पर्यटन, पर्यावरण, भौगोलिक, मानचित्र उपकरण।

अध्ययन के उद्देश्य

1. छ.ग. के पर्यटन स्थलों का अध्ययन करना।
2. पर्यटन स्थलों की समस्याओं की जानकारी प्राप्त करना।
3. पर्यटन स्थलों की विकास की संभावनाओं को पता करना।
4. पर्यटन में परिवहन व्यवस्था एवं अन्य पर्यावरणीय महत्व को जानना।

शोधप्रविधि

प्रस्तुत शोधपत्र उद्देश्य के अनुरूप प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से जानकारी एकत्रित किया गया है। निरीक्षण विधि द्वारा भी स्रोतो को वास्तविकता से परिचित कराया गया है।

महत्व

पर्यावरणीय तत्वों में स्थानीय जैव सम्पदा आधारित विभिन्नता तथा परिस्थितिक तंत्र पर्यटकों को आकर्षित करते है। स्थानीय पेड़–पौधे, जीव जन्तु आदि महत्वपूर्ण है। स्थानीय स्थलाकृति, नदी, घाटियां, सागर, स्वास्थ्य वर्धक पहाड़ी जलवायु वाले क्षेत्र पर्यटकों को आकर्षित करते है। मौसमी कारण जैसे तापमान, पवन, आर्द्रता, वर्षा पर्यटन से सीधे संबंध रखते है। इसी कारण सभी प्रमुख पर्यटन स्थलों की जानकारी वेबसाईट पर दी जाती है।

मौसम के कारण सर्दियों में पर्यटकों की संख्या अधिक और गर्मियों में कम होती हैं। एक सुव्यवस्थित परिवहन व्यवस्था भी पर्यटन क्षेत्र की रीढ़ की हड्डी कही जा सकती है। पर्यटक अपने मूल स्थान से गंतव्य तक आसानी से आ–जा सके इनके लिए उन्नत तकनीकों के साथ परिवहन व्यवस्था सुचारू रूप से पूर्ण हो। पर्यटन के अंतर्गत प्रत्येक मानव समूह के रीति–रिवाज और संस्कार अलग–अलग है। सभी अपने ढ़ंग से अपने धर्मों, त्यौहारों, भाषाओं और परिवारिक व्यवहारों का पालन करते है। यही विविधता ही पर्यटकों को आकर्षित करती है। पर्यटनों से दूसरी संस्कृति को जानने व समझने का अवसर भी मिलता है इसलिए पर्यटक मानव के संदर्भ में स्थानीय रूप से जन्म–मृत्यु दर, स्वास्थ्य, आवास, धर्म, त्यौहार, रीति रिवाज, शिक्षा, भोजन, मानव बस्तियों की बनावट आदि का अध्ययन करने के लिए विभिन्न संस्थाओं स्कूल, कॉलेज एवं समाज सेवी संस्थाओं द्वारा यात्रा की जाती है। दूसरी संस्कृति को जानने के साथ ही मनोरंजन की भी कामना पूरी होती है। इस प्रकार की स्थानीय संस्कृति गतिविधियां अपनी रोमांचक प्रकृति और विलगता के कारण पर्यटकों को आकर्षण के केन्द्र बना जाती है।

पर्यटक अनेक प्रकार की भौगोलिक मानचित्रों, उपकरणों व पुस्तकों का प्रयोग करते है। मानचित्रावली में पर्यटन पुस्तिका, पर्यटन केन्द्रों या विभिन्न स्थानों के पर्यटन विभागों के विवरण प्राप्त कर दर्शनीय स्थलों के चित्रों की सहायता से नयी–नयी जानकारी प्राप्त करता है।

पर्यटन में बाधक कारण

पर्यटन को बढ़ाने और विकसित करने में, विभिन्न भौगोलिक तत्वों का बहुत योगदान होता है साथ ही कुछ भौगोलिक विनाशकारी घटनाएँ पर्यटन उद्योग को नुकसान पहुंचाता है। जिसमें ज्वालामुखी, भूकम्प, सुनामी, भूमंडलीय ऊष्मीकरण, वन्य–जीव का आवासीय क्षेत्र में आगमन आदि महत्वपूर्ण है।

छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ व्यापक विविधता और सुन्दर मनोरम स्थलों को सहेजे हुए पर्यटकों को आमंत्रित करता है। छत्तीसगढ़ के प्रमुख धार्मिक और ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों का वर्णन अग्र प्रकार से वर्णित है।

भारत के सबसे बड़े राज्य मध्यप्रदेश के दो हिस्से कर 1 नवम्बर, 2000 को अस्तित्व में आया छत्तीसगढ़ देश का 26वां राज्य है। यह प्राकृतिक संपदा से भरपूर हैं और इसे सम्पन्न बनाने में प्रकृति ने अपनी ओर से कोई कसर नहीं छोड़ी है। यहाँ खनिजों की भरमार है, घने पेड़ों से आच्छादित वन संपदा है और उपजाऊ भूमि की बहुतायत है। कोयला, बॉक्साइट, तांबा, लौह अयस्क, सीसा और चांदी के साथ डोलोमाइट और लाइम स्टोन से छत्तीसगढ़ भरा है। प्रदेश की विशाल वन संपदा जहां अर्थव्यवस्था में अपनी भागीदारी तो दिखाती ही है, साथ ही वन्य जीवों के लिए नैसर्गिक माहौल भी उपलब्ध कराती है। खनिज तथा वन संपदा से भरे इस राज्य को अब महत्वपूर्ण औद्योगिक केन्द्र बनाये जाने की तैयारियां शुरू की गई हैं। सीमेंट, लोहा, इस्पात, एल्युमीनियम, केमिकल्स, जूट, कागज तथा हैंडीक्राफ्ट आदि इस राज्य के महत्वपूर्ण औद्योगिक उत्पाद हैं। छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था में कृषि भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यहाँ धान के खेत सर्वत्र फैले हुए हैं इसी कारण इस क्षेत्र को ''धान का कटोरा'' कहा जाता है।

छत्तीसगढ़ की शानदार ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत है जिसका उल्लेख महाभारत और रामायण जैसे पौराणिक ग्रंथों में कौशल के नाम से मिलता है। विभिन्न साम्राज्यों जैसे मौर्य, सातवाहन, वकातक, गुप्तवंश, नलवंश, पांडुवंश, सोमवंशी, नागवंशी, मॉडलिक और कलचुरी आदि प्रमुख हैं जो इस क्षेत्र से जुड़े रहे। 1732 से 1818 की अवधि में यह प्रदेश मराठों के अधीन रहा और बाद में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना होने के बाद इसे नागपुर प्रेसीडेंसी के अधीन कर दिया गया। आदिवासी जातियों की बहुतायत होने से छत्तीसगढ़ की अपनी अलग रंगीन सांस्कृतिक धरोहर है। इस राज्य में छोटी–बड़ी कुल 35 आदिवासी जातियां हैं जो पूरे प्रदेश में फैली हुई हैं। इन जातियों के थिरकते लोकनृत्य, मदमाता संगीत और आकर्षक लोकनाटक पर्यटकों का मन मोह लेते हैं। पौराणिक हिंदू ग्रंथ महाभारत पर आधारित संगीतमय नृत्य–नाटिका ''पंडवानी'' राज्य की प्रमुख नृत्य–नाटिका है, जो पूरे विश्व में

प्रसिद्ध है। प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर यह राज्य अपने हैरतअंगेज कीर्तिस्तंभों की बदौलत देश के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक हैं। आदिवासियों के मंत्रमुग्ध कर देने वाले लोकनृत्यों, गहरी गुफाओं, विशाल किलों और आश्चर्यचकित कर देने वाला प्राकृतिक सौंदर्य पर्यटकों के मन पर गहरी छाप डालता है। छत्तीसगढ़ राज्य नैसर्गिक संदर्भ से परिपूर्ण है और यहाँ पर्यटन विकास की अत्याधिक संभावनाएं है। यह प्राकृतिक, ऐतिहासिक, और सांस्कृतिक धरोहरों से सम्पन्न है जिसकी ख्याति विश्व प्रसिद्ध है।

जगदलपुर

रायपुर से 299 कि.मी. दूर यह बस्तर का जिला मुख्यालय है। इंद्रावती नदी के मुहाने पर बसा जगदलपुर एक प्रमुख सांस्कृतिक एवं हस्त शिल्प केन्द्र है। बस्तर जिले में विभिन्न आदिवासी जातियों का निवास हैं। इस जिले में बसने वाली प्रमुख जातियां हैं– गोंड, भत्रा, उनाव, कोरवा, कोल, हल्बा एवं माड़िया। इस जिले में कई पारंपरिक मेले तथा त्यौहार आयोजित होते रहते हैं। इसके अलावा यहाँ लोक संगीत, लोक नृत्य एवं लोक नाटकों का आयोजन भी किया जाता है। इन समारोहों में कई दुर्लभ प्राचीन एवं ग्रामीण वाद्ययंत्रों का प्रयोग किया जाता है जो पर्यटकों का मन मोह लेते हैं।

मानव विज्ञान संग्रहालयः इसमें राज्य निर्मित सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं मनोरंजन से संबंधित वस्तुएं प्रदर्शित की गई हैं।

जिला प्राचीन संग्रहालयः पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग द्वारा स्थापित इस संग्रहालय में प्राचीन धरोहरों को प्रदर्शित किया गया है।

डांसिंग कैक्टसः यह कला केन्द्र बस्तर के विख्यात कला संसार की अनुपम भेंट हैं। यहीं पर एक प्रशिक्षण संस्थान भी स्थापित है।

जगदलपुर से भ्रमण

कोंडागांव (76 कि.मी.): ''शिल्पग्राम'' के नाम से प्रसिद्ध यह जगह जगदलपुर के उत्तर में स्थित है। इसकी स्थापना अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शिल्पी जयदेव बघेल के प्रयासों से ही संभव हुई है।

केशकाल (130 कि.मी.): राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 43 पर स्थित इस कस्बे में अद्भुत प्राकृतिक छटा के साथ तेलिन माता का मंदिर और घाटी के दर्शन भी किए जा सकते हैं।

पंचवटीः केशकाल से मात्र दो कि.मी. दूर यह पर्यटन स्थल राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 43 पर तालुक मुख्यालय है। वन विभाग द्वारा विकसित इसे ''छत्तीसगढ़ की पंचवटी'' के नाम से भी जाना जाता है।

कोटमसर (40 कि.मी.): कोटमसर को हैरतअंगेज प्राकृतिक भूमिगत गुफा के लिए जाना जाता है जो विश्व में अपनी तरह की एक मात्र गुफा है। यह गुफा लगभग साढ़े चार हजार फुट लंबी है और भूमितल से लगभग 60215 फुट गहराई पर स्थित है। चूने और पानी से बनी इस सुंदर गुफा से कहीं–कहीं शिवलिंग का आभास भी होता है। इस गुफा का प्रवेश द्वारा केवल पांच फुट ऊंचा और तीन फुट चौड़ा है तथा इसमें पांच कक्ष बने हैं।

इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान (200 कि.मी.): रायपुर से 490 कि.मी. दूर जंगलों के बीच बनाया गया इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान 1258 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैला हुआ है। यहाँ पाए जाने वाले प्रमुख जानवर हैः तेंदुआ, जंगली भैंसा, हिरण आदि।

कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान (30 कि.मी.): 200 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैले इस उद्यान में पहाड़ियां, घाटियां, झरने तथा गुफाएं आदि हैं। यह उद्यान चारों ओर से कोविदार, बांस एवं सागवान के घने पेड़ों से घिरा है। इस उद्यान में शेर, चीता, बाघ, तेंदुआ, हिरण, भालू, सांप, मैना ओर कोयल आदि भी देखे जा सकते हैं। भैंसादरहा मगरमच्छ संरक्षण क्षेत्र यहाँ नजदीक कांगेर घाटी के कांगेर खोलब मुहाने पर स्थित है। एशिया का पहला जीवोध्यान भी यहीं स्थित है। इसका प्रमुख आकर्षण पुरातत्व पेड़ों पर चिन्ह अंकित करना है।

भैरमगढ़ अभयारण्य (139 कि.मी.): इंद्रावती नदी के किनारे पर स्थित इस अभ्यारण्य की स्थापना 1983 में की गई थी। 139 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैले इस अभ्यारण्य में चीता, बाघ, तेंदुआ, सांभर, जंगली भैंसा एवं बारहसिंगा आदि

प्रमुख हैं।

पामेड़ वन्यजीव अभ्यारण्य (155 कि.मी.): यह बस्तर का दूसरा प्रमुख वन्यजीव अभ्यारण्य है। 262 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैले इस क्षेत्र में मुख्य रूप से जंगली भैंसा पाया जाता है। अन्य जानवरों में तेंदुआ, बाघ, हिरण और सांभर आदि हैं।

भैंसादरहाः यह प्रदेश का एकमात्र मगरमच्छ संरक्षण क्षेत्र है।

चित्रकोट (40 कि.मी.): चित्रकोट की प्राकृतिक छटा दर्शनीय है। इंद्रावती नदी पर 90 फुट की ऊंचाई से गिरते झरने को देखना रोमांचक अनुभव है। यहाँ मछली पकड़ने, नाव चलाना और तैराकी की सुविधाएं भी उपलब्ध हैं। जगदलपुर से मात्र 40 कि.मी. दूर यह रमणीक स्थल प्राकृतिक सौंदर्य का लुत्फ उठाने वाले पर्यटकों को स्वतः ही आकर्षित करता है।

दन्तेवाड़ाः जगदलपुर मुख्यालय से 85 कि.मी. दूर पर दन्तेवाड़ा स्थित है। बस्तर नरेशों के आराध्य इस क्षेत्र में धार्मिक विश्वास एवं श्रद्धा की प्रतीक दन्तेश्वरी देवी है। शंखिनी और डंकिनी नदियों के संगम पर स्थित रानी भाग्नेश्वरी देवी द्वारा निर्मित यह मंदिर दर्शनीय है। नवरात्रि पर यहां विशाल मेला लगत है। यहां जाने के लिए जगदलपुर से बस सेवाएँ उपलब्ध है।

हाथीदरहाः मतनेर जल प्रपात की वजह से पहचाना जाने वाला हाथी दरहा चित्रकोट से मात्र 3 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यह लगभग 100 फुट की ऊंचाई से गिरता है। अंग्रेजी के यू शब्द के आकार वाली घाटी जो 150–200 फुट गहरी है, इस क्षेत्र की सबसे गहरी घाटी है।

तीरथगढ़ः कांगेर नदी पर बना तीरथगढ़ पर्यटकों के लिए स्वर्ग से कम नहीं है। यह जगदलपुर से 38 कि.मी. दूर कांगेर राष्ट्रीय उद्यान पर बना हुआ है।

कांगेर धारा और कुंआरा सौंदर्यः तीर्थगढ़ पर आकर्षक झरने का निर्माण करने के बाद कांगेर नदी और अधिक आकर्षक रूप से आठ–दस हिस्सों में बंट जाती है और कांगेर धारा इनमें से ही एक है। यहाँ हजारों वर्ष पुरानी चट्टानें हैं और हाथीनुमा पत्थर हैं इसी कारण इसे ''कुंआरा सौंदर्य'' के नाम से पुकारा जाता है।

बस्तर के मेले एवं त्यौहार

दशहराः बस्तर का दशहरा समारोह विश्व प्रसिद्ध है। दशहरा यूं तो पूरे देश में मनाया जाता है लेकिन बस्तर की आदिवासी जातियों के इसे मनाने का अपना अलग ही अंदाज है। यहाँ के आदिवासी अपनी कुलदेवी माँ दंतेश्वरी की बस्तर दशहरा परिक्रमा कर दशहरा मनाते हैं। अक्टूबर–नवम्बर में मनाये जाने वाले इस पर्व की शुरूआत हरियाली अमावस्या को स्थानीय देवी काच्छिनगुड़ी, माँ दंतेश्वरी, भगवान हनुमान एवं भगवान विष्णु की पूजा अर्चना से होती है। इस दौरान यहाँ दो रथयात्राएँ 'फूल रथ' और 'विजय रथ' भी आयोजित की जाती है। दशहरे के दिन मारिया और ध्रुवा नाम की दो आदिवासी जातियों के लोगों द्वारा रथ को चुरा कर कुम्हाडा कोट नामक स्थान पर छोड़ दिया जाता है। तत्पश्चात देवी की पूजा की जाती है और फिर रथ को वापस देवी माँ दंतेश्वरी के मंदिर पर लाया जाता है। पूरी रात चलने वाले इस समारोह में हजारों आदिवासी रथ को खींचते हुए माँ दंतेश्वरी के मंदिर पर लाते हैं। नवरात्रि का अंतिम दिन नवखानी के नाम से जाना जाता है। इस विशेष दिन से ही नई फसल की पैदावार को उपयोग शुरू किया जाता है।

गोंचा पर्वः दशहरा समारोह के दौरान ही एक अन्य रथ यात्र आयोजित की जाती है जो गोंचा पर्व के नाम से प्रसिद्ध है। इस पर्व के दौरान एक लंबे खाली बांस से पेंग नाम के फल से बनी गोलियों को दागा जाता है।

बिलासपुर

अरपा नदी के किनारे पर बसा बिलासपुर छत्तीसगढ़ का मुख्य औद्योगिक नगर है। बिलासपुर के आस पास प्रमुख दर्शनीय स्थल है काननपेंडारी (वन्य जीव संरक्षण उद्यान), विवेकानंद पार्क, श्री दीनदयाल उपाध्याय स्मृति वन (व्यापार विहार), साई मंगलम (व्यापारा विहार), श्री अयप्पा स्वामी मन्दिर (तिफरा), काली मंदिर (तिफरा), मारीमाइ

मंदिर (झोपड़ापाड़ा)। बिलासपुर कोसा रेशम एवं अच्छी किस्म के चावल के लिये भी जाना जाता है।

बिलासपुर से भ्रमण

रतनपुर (25 कि.मी.): यह ऐतिहासिक एवं धार्मिक नगर बिलासपुर से कठघोड़ा मार्ग पर स्थित है। इसका उल्लेख पौराणिक ग्रंथ महाभारत में भी मिलता है और इसे कलचुरी और मराठा राजाओं की राजधानी बनने का गौरव प्राप्त है। इस नगर की स्थापना महाराजा रत्नदेव–प्रथम ने की थी और उन्हीं के नाम पर इसका नामकरण रतनपुर किया गया। यहाँ कई सुंदर झीलें और पहाड़ियां आई हुई हैं जो इसके सौंदर्य में चार चाँद लगाती है। इसी कारण इसे छत्तीसगढ़ की टीलों की नगरी भी कहा जाता है। यहाँ के प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं: महामाया मंदिर, रामपंचायत मंदिर (रामटेकरी), बीस दुबरिया सती मंदिर, मूसे खां की दरगाह आदि।

मल्हार (40 कि.मी.): इस प्राचीन स्थल पर गुफाओं में पातालेश्वर महादेव, देवरी और दंतेश्वरी देवी के मंदिर आए हुए हैं। अन्य दर्शनीय स्थलों में चारभुजा वाले भगवान विष्णु की प्राचीन मूर्ति है। एक संग्रहालय भी यहाँ है जहां वैष्णव, शैव और जैन धर्मो की मूर्तिया संग्रहीत है।

तालागांव (30 कि.मी.): इस प्राचीन स्थल पर देवरानी–जेठानी का मंदिर दर्शनीय है। जेठानी मंदिर हालांकि ध्वस्त हो गया है लेकिन देवरानी का मंदिर का अभी भी भारत की कला एवं संस्कृति की उत्कृष्ट झलक प्रस्तुत करता है। रूद्र शिव की अद्भुत मूर्ति पर्यटकों को आकर्षित करती है।

कबीर चबूतरा (41 कि.मी.): कबीर पंथियों का पावन स्थल है।

बांगो (100 कि.मी.): इस स्थान को मिनीमाता जलाशय तथा हसदेव–बांगो योजना के लिए जाना जाता है। महानदी की सहायक नदी हसदेव पर बना विशाल बांध दर्शनीय है। लगभग 6730 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में बना यह बांध ढाई कि. मी. चौड़ा एवं 87 मीटर ऊंचा है।

केन्दई जलप्रपात (132 कि.मी.): यह आकर्षक जल प्रपात पहाड़ी नदी से 200 फुट की ऊँचाई से गिरता है तथा यहाँ पर्यटकों को अनोखा रोमाँचक अनुभव होता है।

दंतेवाडा

जगदलपुर से 55 कि.मी. की दूरी पर स्थित दंतेवाड़ा दंतेश्वरी देवी के मंदिर के लिये विश्व प्रसिद्ध है। यह प्रसिद्ध मंदिर शांखिनी व डंकिनी नदियों के संगम पर बनाया गया है। इसका निर्माण रानी भाग्येश्वरी देवी ने किया था।

दंतेवाड़ा से भ्रमण

बारसूर (75 कि.मी.): यह छोटा–सा कस्बा मंदिरों के समूहों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ 11वीं व 12वीं शताब्दी के प्राचीन मंदिरों में देवरली मंदिर, चंद्रादित्य मंदिर, मामा भांजा मंदिर और बत्तीसी मंदिर प्रमुख है।

बोधघाटः बारसूर से 8 कि.मी. पर स्थित बोधघाट के पास ही सात धारा पर्यटकों में काफी लोकप्रिय है। यहाँ की प्राकृतिक छटा में इंद्रावती नदी का पहाड़ों के बीच से गिरना चार चांद लगा देता है।

किरंदूल (बैलाडीला) (40 कि.मी.): यह लौह अयस्क के लिए विश्व प्रसिद्ध है और यहाँ का अधिकांश लौह अयस्क जापान को निर्यात किया जाता है। यहाँ पहाड़ी पर बसे आदर्श नगर की प्राकृतिक छटा दर्शनीय है और यह मध्यप्रदेश के प्रमुख पर्यटन स्थल पचमढ़ी के सदृश है।

धमतरी

धमतरी की उपजाऊ एवं सुन्दर धरती पर कई नदियाँ बहती हैं, जिनमें महानदी एवं सोंढूर प्रमुख हैं।

धमतरी से भ्रमण

गंगरेल बांध (13 कि.मी.): इस बांध पर पिकनिक का आनंद लिया जा सकता है।

सीतानदी अभ्यारण्यः 553 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैले इस अभ्यारण्य में बाघ, सांभर एवं हिरण पाए जाते हैं।

सिहावा (65 कि.मी.): यह स्थल महानदी का उद्गम स्थल है और प्रसिद्ध संत हरिनजी का आश्रम यहीं स्थित है। यहाँ के अन्य पर्यटक स्थलों में कर्णेश्वर मंदिर, गणेश घाट, हाथी खोह, दंतेश्वरी या सरोवर गुफा, अमृत कुंड और महामाई मंदिर आदि है।

बारनवापारा: यह वन्य जीव अभ्यारण्य रायपुर से 103 कि.मी. दूर स्थित है। 244 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैले इस अभ्यारण्य में मुख्यतः पाए जाने वाले जानवरों में बाघ, जंगली भैंसा और भालू आदि हैं।

दुर्ग

रायपुर से 35 कि.मी. की दूरी पर स्थित दुर्ग घने जंगलों एवं खनिज भण्डार के लिये जाना जाता है।

दुर्ग से भ्रमण

भिलाई (10 कि.मी.): इस्पात शहर के नाम से प्रसिद्ध भिलाई में भारत का पहला निजी क्षेत्र का इस्पात कारखाना यहीं स्थापित किया गया हैं। रूस की सहायता से स्थापित इस कारखाने में अति आधुनिक उपकरणों एवं तकनीक द्वारा इस्पात का निर्माण किया जाता है। आधुनिक सुविधा सम्पन्न एवं उत्कृष्ट तरीके से बसाई गई भिलाई टाउनशिप में भारत और रूस की सरकारों के सहयोग से विकसित मैत्रीबाग नामक प्रसिद्ध बगीचा हैं जो भारत एवं रूस की मैत्री का प्रतीक है। 100 एकड़ क्षेत्र में फैले इस बगीचे में चिड़ियाघर भी है जहां देश–विदेश के पशु–पक्षी देखे जा सकते हैं।

देवबलोदा (3 कि.मी.): भगवान शिव के प्राचीन मंदिर के लिए प्रसिद्ध।

तांदुला बांध (64 कि.मी.): तांदुला नदी पर स्थित तांदुला बांध एक पिकनिक स्थल के रूप में ख्याति पा रहा है।

नगपुरा (14 कि.मी.): सीनोत नदी के किनारे बसा यह स्थान जैन धर्म का धार्मिक स्थल है और जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर भगवान पारसनाथ के अद्भुत मंदिर के लिए विख्यात है। इस मंदिर के दर्शनों के लिए लाखों लोग भारत एवं विश्व से यहाँ आते हैं।

जांजगीर

कलचूरी वंश के महाराजा जाजल्य देव की नगरी, भगवान विष्णु के मंदिर के लिये प्रसिद्ध है। इस मंदिर का निर्माण, 12वीं शताब्दी में शुरू हुआ किन्तु यह आज भी पूर्ण नहीं हो सका।

जांजगीर से भ्रमण

पीथमपुर: इस स्थान पर अनेक मंदिर हैं लेकिन उनमें सबसे प्रमुख है कालेश्वर महादेव का मंदिर। इस शहर में भगवान शिव का विवाह बड़ी धूमधाम से आयोजित किया जाता है और यह बड़े समारोह का रूप ले लेता है।

चांपा: यह एक प्राचीन ऐतिहासिक शहर है। यहाँ के प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं: समलेश्वरी देवी का मंदिर, राजमहल और रामबंधा तथा चांपा से 17 कि.मी. दूर मदवारानी मंदिर।

शिवरी नारायण: महानदी के किनारे पर स्थित शिवरी नारायण हिंदू धर्मावलंबियों के लिए तीर्थ स्थान है। कहते हैं भगवान राम वनवास के दौरान यहाँ आए थे और यहाँ की एक ग्रामीण महिला शबरी ने उन्हें बेर खाने को दिए। बेर मीठे हैं, यह जानने के लिए शबरी ने उन्हें थोड़ा चख लिया था और भगवान राम ने शबरी के झूठे बेर भी बड़े प्रेम से खाए थे। यहाँ के अन्य दर्शनीय स्थल हैं: नारायण मंदिर और चंद्रा–चूड़ेश्वर मंदिर।

खारोद: छत्तीसगढ़ की काशी के नाम से विख्यात यह शिवरी नारायण से मात्र 5 कि.मी. दूर है। यहाँ भगवान शिव का प्राचीन मंदिर लाखामानेश्वर है जहां हर साल महाशिवरात्रि का त्यौहार मनाया जाता है।

जशपुर

लोरो घाटी में स्थित जशपुर जिला मुख्यालय है। दर्शनीय स्थलों में बालाजी मंदिर, देवी मंदिर, शिव मंदिर, राज निवास, रानी सती बाग, शांति भवन और चर्च शामिल हैं।

लोरो घाटी (15 कि.मी.): इस फूलों की घाटी का प्राकृतिक सौंदर्य देखते ही बनता हैं।

रानीदाह जलप्रपात (19 कि.मी.): यह सुंदर जलप्रपात पर्यटकों को लुभाने में सक्षम है। जलप्रपात के आस–पास जो अन्य प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं वे हैंः पांचभैया, आनंदवन, फिश पाइंट, दूधधारा, रजतशिला और गिरमा घाटी आदि।

कुनकुरी (40 कि.मी.): यहाँ स्थित जो प्रसिद्ध कैथोलिक चर्च है वो एशिया का दूसरा सबसे बड़ा कैथोलिक चर्च माना जाता है।

कांकेर

यह स्थान कई प्राचीन मंदिरों के लिए विख्यात है। इनमें से प्रमुख हैं. राजसवकल, जगन्नाथ मंदिर, बालाजी मंदिर, लक्ष्मीनारायण मंदिर, कंकालिन माता मंदिर, शीतला माता का मंदिर और जोगी गुफा आदि।

माँ सिंहवासिनी मंदिरः यहाँ दुर्गा और काली के अवतार सिंहवासिनी देवी का प्रसिद्ध मंदिर है।

गड़िया पहाड़ः कांकेर जिले का सबसे ऊंचा स्थान गड़िया पहाड़ है जो ''किला डूंगरी'' के नाम से विख्यात है। यहाँ नजदीक ही सोनई–रूपाई के नाम से प्रसिद्ध सरोवर भी है।

भोरमदेवः यह स्थान 11वीं सदी में बनाये गये भोरमदेव मंदिर के लिए विख्यात है तथा यह मंदिर चांदेला स्थापत्य कला का उत्कृष्ट नमूना है। इस अद्भुत मंदिर को ''छत्तीसगढ़ का खजुराहो'' भी कहा जाता है। मंदिर पर नृत्य की आकर्षक भाव–भंगिमाएं के साथ–साथ हाथी, घोड़े, भगवान गणेश एवं नटराज की मूर्तियां उकेरी गई है।

चकरी महलः भोरमदेव के निकट यह स्थल भगवान शिव के 14वीं सदी में बनाए गए छोटे से मंदिर के लिए प्रसिद्ध है।

कोरबा

यह प्रदेश का प्रमुख औद्योगिक केन्द्र है तथा कोरबा सूपर थर्मल पावर स्टेशन के लिये प्रसिद्ध है। इसके द्वारा उत्पादित बिजली का प्रयोग देश के प्रमुख औद्योगिक कारखानों जैसे भिलाई, बाल्को और कोरबा कोलफील्ड आदि द्वारा किया जाता है।

पालीः 9वीं सदी का शिव मंदिर जो चारों ओर से दस्तकारी की उत्कृष्ट मिसाल है, इस शहर का प्रमुख आकर्षण है। पाली से 20 कि.मी. दूर स्थित लाफा में पहाड़ी पर स्थित महामाया मंदिर है। यहाँ अन्य दर्शनीय स्थलों में किला एवं शिवलिंग गुफाएं प्रमुख हैं।

सिरपुर (श्रीपुर): महासमुंद जिले में स्थित यह ऐतिहासिक नगर पहले श्रीपुर (संपन्नता की नगरी) के नाम से जाना जाता था। 5वीं से 8वीं शताब्दी तक कौशल की राजधानी रहे श्रीपुर में 7वीं शताब्दी में चीनी यात्री व्हेंगसांग का आगमन हुआ था। यह स्थान छठी से दसवीं शताब्दी तक बौध धर्म का महत्वपूर्ण स्थल रहा है जिसकी झलक यहाँ हर जगह देखी जा सकती है। लक्ष्मण मंदिर, आनन्द प्रभु, कुटी विहार, स्वास्तिक विहार, गंधेश्वर मंदिर यहाँ के अन्य आकर्षण है।

रायगढ़

यह छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में जाना जाता है, यहाँ के कथक घराना, चक्रधर समारोह, कोसा रेशम एवं हस्तशिल्प प्रसिद्ध है। अन्य दर्शनीय स्थलः राधाकृष्ण मंदिर, राजमहल व भूपदेवपुर झरना प्रमुख हैं।

रायगढ़ से भ्रमण

सिंघनपुरः यह स्थान पुरातत्व दृष्टि से महत्वपूर्ण बहुत वर्षों पुरानी कई गुफाओं के लिए प्रसिद्ध है, जो पर्यटकों को आकर्षित करती है।

रामझरना (18 कि.मी.): भूपदेवपुर शहर से मात्र 3 कि.मी. दूर स्थित है। इस जगह पर अनेक सुंदर झरने बहते रहते हैं।

बादलखोलः 104.55 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैले इस वन्य जीव अभ्यारण्य में कई जानवरों एवं पक्षियों को विचरण करते देखा जा सकता है। यहाँ पाए जाने वाले जानवरों में बाघ, बारहसिंगा व सांभर प्रमुख हैं।

कबरा पहाड़ीः यहाँ पर कई प्राचीन गुफाएँ स्थित हैं जो चित्रकला एवं पुरातत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

सारनगढ़ः यह स्थान गिरीबीलस महल, गोमरदा अभ्यारण्य (60 कि.मी.). किनकेरी व केदार बांध, गुटका बांध और पूजारी पाली आदि हेतु प्रसिद्ध है।

धर्मजयगढ़ः इस स्थान को रेशम धागे के लिए जाना जाता है। यहाँ के अमली टिकरा और सिसरिंगा घाट भी प्रसिद्ध है।

रायपुर

छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर राज्य का प्रमुख व्यापारिक एवं औद्योगिक नगर है। यहाँ के प्रसिद्ध दर्शनीय स्थलों में महामाया मंदिर, किला, प्राचीन सरोवर, भंडारपुरी, रहस्यमय शिव मंदिर, महंत घासीदास संग्रहालय और रामकृष्ण मिशन प्रमुख हैं।

दूधाधारीमठः रायपुर की पुरानी बस्ती में स्थित यह मठ राजा जैतसिंह द्वारा 17वीं सदी में बनाया गया था। यहाँ का मठ प्रमुख केवल दूध ही पीता था इसलिए इसका नाम दूधाधारी मठ हो गया है।

रायपुर से भ्रमण

राजिम (45 कि.मी.): इस स्थान को ''छत्तीसगढ़ का प्रयाग'' भी कहा जाता है। यहाँ पर तीन नदियों–महानदी, पैरी और सोंढुर का संगम होता है। प्राचीन मान्यतानुसार इस शहर को पहले कमलक्षेत्र और पदमपुर के नाम से जाना जाता था और भगवान विष्णु के मंदिर के कारण यह धार्मिक नगरी के रूप में विख्यात था। अन्य दर्शनीय स्थल–राजीव लोचन मंदिर, कालेश्वर महादेव मंदिर, सोमेश्वर महादेव मंदिर, राजिमा तेलिन का मंदिर, रामचंद्र मंदिर, काल भैरव का मंदिर, जगन्नाथ मंदिर और ब्रह्मचर्य आश्रम आदि। राजीव लोचन मंदिर कमल नयन वाले भगवान विष्णु को समर्पित है। यहाँ आठवीं–दसवीं सदी में बनाई गई भगवान विष्णु की चार भुजा वाली आदमकद मूर्ति है। जगन्नाथपुरी की यात्रा करते समय यात्रियों का यह विश्रामस्थल है। माघ पूर्णिमा पर एक माह चलने वाला मेला भी आयोजित किया जाता है। 14वीं–15वीं सदी का कालेश्वर महादेव मंदिर महानदी और पैरी नदी के किनारे छोटे से टापू नुमा हिस्से पर आया हुआ है।

चंपारण्य (60 कि.मी.): यह स्थल छत्तीसगढ़ के प्रमुख धार्मिक स्थलों में से एक है। यह वैष्णव धर्म के गुरु वल्लभाचार्यजी की जन्म स्थली है और पुश्तीमार्गीय संप्रदाय की उद्‌गम स्थली भी है। यहाँ प्रचलित मान्यता के अनुसार लक्ष्मण भट्ट जी अपनी गर्भवती पत्नी और परिवार के साथ काशी से अपने घर कांकरवाड़ जा रहे थे। तभी उनकी पत्नी इल्मागुरुजी को समय पूर्व प्रसव पीड़ा हुई और उन्होंने यहाँ एक बालक को जन्म दिया जो कोई हरकत नहीं कर रहा था। लक्ष्मण भट्ट जी ने सोचा की यह बालक मृत ही जन्मा है और उन्होंने इस बालक को नजदीक ही पेड़ के खोल में डाल दिया। आश्चर्यजनक रूप से वह बालक सुबह जीवित पाया गया और आगे चलकर वल्लभाचार्यजी के नाम से प्रख्यात हुआ। वह पेड़ आज तक नहीं काटा गया है क्योंकि यहाँ के लोग मानते हैं यदि ऐसा किया गया तो भयानक संकट आ सकता है। गर्भवती महिलाओं को यहाँ से हटा दिया जाता है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि गर्भवती महिलाओं के साथ भी वही घटित हो सकता है जो इल्मागुरुजी के साथ हुआ। गुरु वल्लभाचार्य जी के अनुयायियों ने उनकी याद में 20वीं सदी के प्रथम दशक में एक मंदिर का निर्माण कराया है। हर वर्ष जनवरी–फरवरी में इस मंदिर पर गुरु वल्लभाचार्यजी की जयंती के अवसर पर वार्षिक समारोह का आयोजन किया जाता है। इस जगह चंपकेश्वर महादेव का प्राचीन मंदिर भी है जहां शिवलिंग तीन हिस्सों में विभाजित है जिन्हें गणेश, पार्वती और शिव के नाम से जाना जाता है।

आरंग (34 कि.मी.): यह एक प्राचीन मंदिरों की नगरी है। यहाँ के प्रमुख मंदिरों में भानदेवल मंदिर, बागदेवल मंदिर और महामाया का मंदिर प्रमुख है। 11वीं सदी में निर्मित भानदेवल मंदिर तत्कालीन स्थापत्य कला की उत्कृष्ट मिसाल है। इस मंदिर के अंदर काले पत्थर से जैन तीर्थकरों की विशाल मूर्तियां बनी हुई है। खजुराहों मंदिर की तरह ही यहाँ बागदेवल मंदिर है। महामाया मंदिर में विशाल चट्टान पर सभी चौबीस जैन तीर्थकरों की मूर्तियां उकेरी

गई हैं।

खल्लारीः महासमुंद जिले में 22 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। ग्राम के पास एक छोटी पहाड़ी पर एक विशाखण्ड है जो सती स्तंभ की एक भाग प्रतीत होती है। यह सिंदूर से पुता हुआ है और जनता खल्लारी माता के रूप में इसकी पूजा करती हैं। खल्लारी माता में महिलाओं को मातृत्व प्रदान करने की असीम शक्ति है। यहाँ पूर्णिमा (मार्च–अप्रैल) माह में वार्षिक मेला लगता है।

अन्य दर्शनीय स्थलः चंडी मातेश्वरी मंदिर, पंचमुखी महादेव और पंचमुखी हनुमान मंदिर, तुरतुरिया आदि प्रसिद्ध है।

नंदनवन (15 कि.मी.)ः रायपुर के वन विभाग द्वारा खारून नदी के किनारे पर स्थित यह सुंदर बागीचा अपने प्राकृतिक सौंदर्य के लिए विख्यात है। यहाँ के चिड़ियाघर में शेर, चीता, जंगली बिल्लियां, हिरण आदि देखे जा सकते हैं।

गिरौधपुरीः सतनामी समाज का यह धार्मिक स्थल संत घासीदास की जन्मस्थली है जिन्होंने सतनाम पंथ की स्थापना की। इस स्थान पर वार्षिक समारोह तथा फरवरी–मार्च के महीने में पांच से सात दिन तक चलने वाला नृत्य समारोह भी दर्शनीय है।

राजनांदगांव

राजनांदगांव जिला गोंड, कंवर, हल्बा आदि आदिवासी जनजातियों के लिये जाना जाता है। यहाँ के प्रमुख आकर्षण हैंः रियासत कालीन महल, गायत्री मंदिर, बर्फानी आश्रम, रानीसागर के निकट चौपाटी, मुक्तिबोध स्मारक, त्रिवेणी संग्रहालय एवं जिला पुरातत्व संघ संग्रहालय ।

राजनांदगांव से भ्रमण

डोंगरगढ़ (40 कि.मी.)ः यह महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल बम्लेश्वरी (बगुलामुखी) देवी के प्राचीन मंदिर के लिए विख्यात है। पहाड़ी पर स्थित बम्लेश्वरी देवी का यह मंदिर महाराज विक्रमादित्य के शासनकाल में डूंगरगढ़ के कामसेन ने बनवाया था। पहाड़ी के नीचे भी माँ बम्लेश्वरी का छोटा मंदिर है। नवरात्रि के दौरान यहाँ श्रृद्धालुओं का मेला सा लगा रहता है। यहाँ के अन्य दर्शनीय स्थलों में श्री बजरंग मंदिर, माँ रनचंडी का मंदिर, तापसी मंदिर, सिद्ध बाबा की समाधि, महावीर मंदिर, शीतला माता का मंदिर, शिव मंदिर, श्री दंतेश्वरी मंदिर आदि प्रमुख हैं। डोंगरगढ़ पहुंचने के लिए रेलवे मार्ग के अतिरिक्त नियमित बस सेवा है। ठहरने हेतु धर्मशालाएँ एवं होटल है। रोपवे के सहारे ऊपर मंदिर में जाया जा सकता है।

खैरागढ़ (39 कि.मी.)ः यह स्थान इंदिरा कला एवं संगीत विश्वविद्यालय के लिए प्रसिद्ध है जो एशिया में अपनी तरह का एक ही हैं। दर्शनीय स्थल रुख्खड़ स्वामी का मंदिर, श्री माँ दंतेश्वरी मंदिर, श्री महाकाली मंदिर, महावीर मंदिर व माँ भद्रकाली का मंदिर आदि।

डोंगरगांवः यह स्थान सिद्धशक्ति बालेश्वरी मंदिर के लिए प्रसिद्ध है। अन्य आकर्षणों में पहाड़ी पर बनी बुद्ध की 30 फुट ऊंची प्रतिमा है।

घाटियारीः यह स्थान मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है।

अम्बिकापुर

यह शहर सरगुजा का जिला मुख्यालय है। मान्यता है कि भगवान श्री राम अपने वनवास के दौरान सरगुजा आये थे। यहाँ के प्राचीन मंदिरों के अवशेष देखने योग्य है।

अम्बिकापुर से भ्रमण

चांगभकारः यह नगर कलचुरी व चौहान शासकों द्वारा निर्मित प्राचीन मंदिरों के लिए विख्यात है।

मैनपाट (45 कि.मी.)ः सतपूरा पर्वत श्रृंखला के मध् में समुद्रतल से 3500 फुट ऊंचाई पर बसा यह स्थल छत्तीसगढ़ का शिमला के नाम से प्रसिद्ध हो रहा है। 1962 के युद्ध में तिब्बत शरणार्थियों के आगमन के बाद चर्चा में आया

था। यहाँ पर तिब्बती संस्कृति और बौद्ध धर्म की झलक देखी जा सकती है। दलाई लामा की जयंती समारोह यहाँ का प्रमुख उत्सव है जिसे यहाँ के लोग धूमधाम से मनाते हैं। इस समारोह में याक का नृत्य दर्शनीय होता है। दलाईलामा के जन्म दिवस पर यहाँ के लोग एक सप्ताह तक उत्सव मनाते है। यह स्थान ऊनी कपड़ों और कालीन के लिए भी जाना जाता है।

रामगढ़: यहाँ पर भारत का प्राचीनतम थियेटर है। ऐसी मान्यता है कि श्री राम ने अपने वनवास के समय यहाँ पर प्रवास किया था। यहाँ दो विशाल गुफाएं हैं उत्तर की ओर आई हुई गुफा को सीताबेंगरा कहा जाता और दूसरी को जोगीमरा के नाम से जाना जाता है। सीताबेंगरा गुफा में भारत का प्राचीनतम थियेटर चलता है जहाँ 50 दर्शक बैठ सकते हैं। मुख्य द्वार पर एक अर्द्धगोलाकार पत्थर रखा गया है। कवियों ने अपनी रचनाओं में इस स्थान का बखूबी उल्लेख किया है। सुतनुका नामक देवदासी और मूर्तिकार देवदत्त की प्रेम कहानी पर भी यह प्रकाश डालता है। इसी कारण ऐसा माना जाता है कि यह भारत का प्राचीनतम थियेटर है।

सेमरसोत अभ्यारण्य (20 कि.मी.): 430.35 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल में फैले इस अभ्यारण्य में पवई नामक झरना बहता है। यहाँ देखे जाने वाले प्रमुख जानवरों में चीता, भालू और बारहसिंगा इत्यादि हैं।

तमोरपिंगला अभ्यारण्य (84 कि.मी.): यहाँ पाए जाने वाले जानवरों में बाघ, भालू, चीता और बारहसिंगा आदि प्रमुख हैं।

पर्यटन के विकास हेतु सुझाव

1. पर्यटन के विकास को बढ़ावा देने के लिए किसी क्षेत्र विशेष में आवश्यक सुविधाओं को विकसित करना।
2. पर्यटन मार्गदर्शिका उपलब्ध कराना।
3. पर्यटन के जानकार गाईड की व्यवस्था कराना।
4. पर्यटन क्षेत्रों की पहचान कराना।
5. वित्तीय सहायता उपलब्ध कराना।
6. परिवहन की समुचित व्यवस्था कराना।
7. विदेशी पर्यटकों के रूकने, ठहरने एवं भोजन के लिए समुचित होटल, रिसोर्ट तथा तकनीकी सुविधा उपलब्ध कराना।
8. विदेशी कार्यालयों का पुनरूद्धार करना।
9. नये सूचनातंत्र एवं संचार के साधनों का विकास करना।
10. पर्यटन के विकास और तीव्र निवेश के लिए नये क्षेत्रों का सृजन कर अधिसूचित क्षेत्र में सम्मिलित करना तथा हस्तशिल्प, सांस्कृतिक विशिष्टताओं को बढ़ावा देना है।
11. स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधाओं का विकास सकना।
12. स्थानीय विनिर्माण उद्योग को बढ़ावा देना।
13. पर्यटन और शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करना।
14. प्राकृतिक पर्यटन स्थल, सामाजिक पर्यटन स्थल, किले/महल एवं इमारते के लिए नीति बनाना।
15. संग्रहालय, लोक प्रथाओं को चिन्हांकित करना।
16. जनचेतना को बढ़ाना।
17. अदृश्य प्राकृतिक स्थलों, जलस्रोत, मूर्तियों एवं दर्शनीय स्थलों को उजागर करना।

निष्कर्ष

पर्यटन उद्योग सूचना तंत्र के विकास के कारण ही विकसित होते है। विभिन्न प्रकार की पत्र पत्रिकाओं,

समाचारपत्र, चलचित्र, टेलीविजन, पर्यटन, एलबम, कम्प्यूटर इन्टरनेट प्रणालियों को विकसित करना जरूरी है। मानव भ्रमण के लिए प्राकृतिक एवं सामाजिक कारणों से आकर्षित होता है। अतः पर्यटको के आने पर उनके रहने–ठहरने की समुचित व्यवस्था होटल आदि हो। पर्यटन में अत्याधुनिक परिवहन के साधनों को बढ़ावा मिले, गाईड के परिवारों का लालन पालन हो जिसमें आर्थिक समृद्धि होगी। पर्यटन आज शिक्षा का मूल विषय है अतः शोध को बढ़ावा देना होगा। आज पर्यटन की ओर मानव आकर्षित हो रहा है इसलिए पर्यटन प्रबंधन में लोग अपना भविष्य बनाने लगे है। देश–विदेश सभी जगह जहां पर्यटन स्थल विकसित है वहां रोजगार के साधन उपलब्ध हो जाते है। अतः स्थानीय प्रबंधन समितियों की स्थापना में पर्यटन उद्योगो को बढ़ावा मिल रहा है। अतः पर्यटन की संभावना बहुत अधिक है, उनका भविष्य उज्जवल है बशर्ते समस्याओं का निराकरण उचित माध्यम से त्वरित हो। किसी स्थल की पहचान आज वहां के पर्यटन स्थल से हो रहा है। लोग आध्यात्मिक रूप से भी स्वीकार करते हुए वहां जाना अपना सौभाग्य समझता है। अतः सभी आवश्यक सुविधाएँ स्थापित कर स्थानीय रूप से समस्याओं का निराकरण कर पर्यटन क्षेत्र को विकसित किया जा सकता है। प्लेस ऑन व्हील्स, रिवर क्रुमेंज का संचालन कर विशेषज्ञों की सहायता से पर्यटन का समुचित एवं लाभकारी प्रबंध करते हुए सकारात्मक जवाबदाही सुनिश्चित कर विकास किया जा सकता है। घरेलु पर्यटकों की सुविधाओं में बुनियादी सुधार करना राज्य सरकारों तथा सेवा कार्य में लगी संस्थाओं के सहयोग में योजनाबद्ध तरीके से पर्याप्त सुविधाओं के प्रबंध से पर्यटन स्थल विकसित होगा तथा देश के सकल घरेलू उत्पाद जी.डी.पी. में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Raise. F-The history of mars, General cartogsaphy op. eft p8.
2. Transport and tourism division Report, May 2008.
3. Website http://tourism.gov.in, 6th may 2008 Indian Government.
4. Website http://www.nationlageographic.com .
5. Website http://www.alternativegreece.gr.

––==00==––